वेदों की खुशबू

ओ३म्

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 57	Year 6	Volume 5	Feuruary 2017 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 6

कहते हैं जिन्दगी का आखरी ठिकाना ईश्वर का घर है।
कुछ अच्छा करले मुसाफिर, क्योंकि किसीके घर खाली नहीं जाते ॥

किसी व्यक्ति ने जो कि अक्सर बुरे कामों में ही लगा रहता था जब यह पक्तियां पढ़ी तो उसकी आत्मा भी हिल गई । वह असमंजस में पड़ गया कि किस प्रकार अपने जीवन के ढंग को बदले ताकि वह भी कुछ अच्छे काम करें । वह एक साधु के पास गया और अपने मन की बात बताई। साधु ने उसे सुना और सोचकर उपाय बताया------देखो तुम्हें मैं यह बहुत सारी कीलें और लकड़ी का फटटा दे सहा हूं। जब भी तुम कोई बुरा काम करो तो यह कील इस तख्त में गाड़ दिया करो और जब कोई अच्छा कार्य किया तो उस गाड़ी हुई कील को निकाल दिया। कोशिश तुम्हारी यही होनी चाहिये कि तख्त में कोई कील गड़ी न हो । ऐसा करने से तुम्हारी बुरे काम करने की आदत अंकुश में आ जायेगी और अच्छे काम करने की आदत पड़ जायेगी।

इस से अच्छा कार्य क्या होता कि घायल शत्रु को भी पानी दे रहे हैं

उस व्यक्ति ने वैसा ही करना शरू कर दिया जैसा कि साधु ने बताया था। अब वह बुरा काम कर भी ले तो तुरन्त कोई अच्छा करने की तलाश में रहता ताकि तख्त पर कोई कील न रहे । धीरे धीरे उसका जीवन बदल गया और कुछ दिन बाद ही वह लकड़ी का फटटा लेकर साधु का धन्यबाद करने चला गया। साधु को वह फटटा वापिस करते हुये वह बोला------महाराज आपकी कृपा से मेरा जीवन ही बदल गया। यह देखो फटटे

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

पर कोई कील नहीं है। साधु ने उस फटटे को देखा और फिर उस व्यक्ति को, मुस्कराते हुये बोला–––––––––जिस हालत में मैने तुम्हें यह फटटा दिया था और जिस हालत में आप वापिस लाये हो, क्या तुम्हें कोई फर्क दिखाई देता है। उस व्यक्ति ने देखा और फिर धीरे से बोला–––––––महाराज इस में निकाली हुई कीलों के निशान देखें जा सकतें हैं। साधु हंसे और बोले––– बिल्कुत ठीक । जिस तरह इस फटटे पर कीलों के निशान रह गये और अब कुछ भददा नजर आता है उसी तरह हमारे बुरे कर्म भी अपनी छाप दोड़ जाते हैं। इस लिये अच्छा यह है कि हम बुरे कर्म करें ही न और हमारी कोशिश अच्छे कर्म करने की होनी चाहिये।

अच्छे कर्म करने के लिये किसी खास समय या दिन की तलाश की आवश्यकता नहीं होती आप हर कर्म को ही अच्छा कर्म बना सकते हो । इस के लिये केवल संकल्प की आवश्यकता है। यह भी आवश्यक नहीं कि अच्छे कर्म करने के लिये आप धन खर्चे । अगर आप संवेदनशील है और आगे बढ़कर कुछ कर सकते हैं तो आप हर समय ही अच्छा काम कर सकते हैं। मैं आप को एक उदाहरण दे रहां हूं। मैं कुछ दिन पहले चंडीगढ़ हाउसिंग बोर्ड एक निजी कार्य के लिये गया। रिसैपशन वाले ने मुझे किसी कर्मचारी का नाम बता कर एक कमरे में उसे मिलने के लिये कहा। वहां पहुंचा तो वह कर्मचारी सीट पर नहीं थी। साथ वाली महिला कर्मचारी से पूछा तो उसने कहा यहीं कही चाय आदि पीने गई होगी आप इंतजार कर लें । मैं बैठ गया । जब वह आधा घ्रंटे तक नहीं आई तो मैंने उस के साथ वाली को कहां कि मैंने सिंफ अपने केस का स्टेटस पूछना है , यह मेरा केस नम्बर है। आप कम्पयूटर से देख कर बता दें। उतर मिला–––नहीं मैं नहीं बता सकती , वही बताऐगी। जिसने यह कहा वह आधे घंटे से खाली बैठी अपनी सीट पर म्रुगफली खा रही थी उस के पास कोई काम नहीं था। उसके पास वाली सीट पर ही दो और कर्मचारी समोसे आदि खा कर अपना समय व्यतीत कर रहे थे। उन्हें तो मैने कहना भी ठीक भी नहीं समझा। दिल में दुख हुआ कि जिन कर्मचारियों को इतनी तनखा मिलती है वह कैसे अपना समय काटते है। मैं बापिस जाने वाला ही था कि एक सरदार जी दूर वाली सीट से आये और बोले–––––––बताईये आपकी समस्या क्या है। मैने उसे बताया तो उसने कमयूटर पर साईट खोली। मेरा केस नम्बर देख कर मेरे केस का स्टेटस बता दिया। सिर्फ एक मिंट लगा। मैने उस का धन्यवाद किया और यह कहने से अपने आप को नहीं रोक सका––––––––ये लोग खाली बैठे हैं पर एक मिंट उठ कर मेरी समस्या हल करना इन्होने ठीक नहीं समझा, दुख होता है। उन सरदार जी ने बहुत सुन्दर बात कही–––––––यह संसार खेती है उस में जो हम बोते हैं वैसा ही फल मिलता है। यही अच्छे और बुरे कर्म में फर्क है। हम हर समय अच्छा कर्म कर सकते है बशर्तिया हम अच्छेकर्म करने का संकल्प ले लें। यह बात बिल्कुल ठीक है ।

अच्छे कर्म करने के लिये आवश्यक नहीं दान दें या पैसा खर्चे। आप किसी को रास्ता दिखाते हो यह भी अच्छा कर्म है। आज हमारे देश में जब अज्ञान और लोभ का बोलबाला है, किसी को ठीक रास्तें पर डालना बहुत ही अच्छा कर्म है जो कि हम सब कर सकते हैं और बहुत अवसर आते है। इस में न हींग लगे न फटकरी। मैं आपको एक उदाहरण दे रहा हूं। हमारे घर एक लड़की काम करने आती है, दो दिन नहीं आई तो कारण पूछने पर उसने बताया–––बच्चा बिमार है। थोड़ी और बात की तो उसने बताया कि पास में ही डाक्टर को दिखाया था, पहले दिन उसने 220 रू लिये और दूसरे दिन 150 और फर्क कुछ नहीं पड़ा। मुझे सब समझते देर नहीं लगी । मैने पूछा सरकारी डिसपैन्सरी में क्यों नहीं दिखाते। उसने बताया उसे डिस्पैंसरी का पता नहीं। मैने उसे सिर्फ डिस्पैंसरी का रास्ता दिखाया और बाकी उसने सब स्वयं किया। और सिर्फ दो रूप्या कार्ड का खर्चने पर उसके बच्चे का सारा ईलाज हो गया। इस तरह बिना पैसा खर्चे भी हम अच्छे कर्म कर सकते है। सिर्फ हमारे में संवेदनशिलता होनी चाहिये।

यह पुराना सन्त ज्ञानेश्वर फिल्म का गाना इस सारे भाव को बहुत सुन्दर बता रहा है

ज्योत से ज्योत जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।।
राह में आये जो दीन दुंखी, सब को गले से लगाते चलो।।
जिसका न कोई संगी साथी, ईश्वर है रखवाला,
जो निर्धन है जो निर्वल है, वो है प्रभु को प्यारा,
प्यार के मोती लूटाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।।
ज्योत से ज्योत————————

आशा टूटी ममता रूठी, छूट गया है किनारा,
बंद करो मत दवार दया का,,दे दो सब को सहारा,
दीप दया के जलाते चलो, , प्रेम की गंगा बहाते चलो।।
ज्योत से ज्योत————————

छाया है चारों और अंधेरा, भटक गई हैं दिशायें,
मानव बन बैठा दानव, किसको व्यथा सुनायें,
घरती को सवर्ग बनाते चलों, प्रेम की गंगा बहाते चलो।।
ज्योत से ज्योत————————

कोई न उंचा, कोई न नीचा, सब में है ईश्वर समाया,
भेद भाव के झूठे भरम में, ये मानव भरमाया,
घरम घ्वजा फहराते चलों, प्रेम की गंगा बहाते चलो।।
ज्योत से ज्योत————————

सारे जगत के हर मानव में है, दिव्य अमर एक आत्मा,
वही ब्रहमा है, वही सत्य है, वही एक परमात्मा ।।
प्रणों से प्राण मिलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।।
ज्योत से ज्योत————————

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

ईश्वर के दर्शन

अभि हाल में ही मैं आन्ध्र प्रदेश गया था । तिरूपति का नाम न केवल भारत में बल्कि विदेशों मे भी प्रसिद्व है कारणं वहां पर हिन्दुओं में भगवान माने जाने वाले बाला जी का मन्दिर है जिन्हें लार्ड वेंकटेश्वर भी कहते है। मुझं याद है कि जब मैं दक्षिण भारत में नौकरी करता था तो किसी भी व्यक्ति के घर में कोई अच्छी घटना हो जाये जो वह बाला जी के दशर्न के लिये परिवार समेत चला जाता। यह दर्शन काई आसान न होते, एक से दो दिन तक पक्तिं में खड़ा रहना पड़ता, फिर दर्शन की बारी आती और वह भी मात्र कुछ सैकेंडं के लिये। पर मैं लोगों को साल में दो तीन बार जाते देखता। जब मैने उन से बात करता तो वे कहते जब भी कोई अच्छी बात हो तो सब से पहले भगवान को अर्पण करने को मन करता है। दूसरी बात भगवान से मिलने को तो बार बार मन करता है कभी दिल नहीं भरता।

यह भी कहा जाता है कि यह मंदिर दुनिया का सब से अमीर मदिर है। और जो भारत की और दूसरे देशों में बसी अमीर हस्तियां है वह करोड़ो में इस मदिर को दान देते है। एक लाख लोग रोज दर्शन करते हैं और एक लाख के करीब को ही मुफत लंगर दिया जाता है। बहुत ही सुन्दर व्यवस्था है जो कि देखने लायक है। जब आप दर्शन के लिये पक्ति में खड़े होते है तब भी आप को मदिर की तरफ से निशुल्क खाना दिया जाता है। जब उतरी भारत में आ गये तो लोगों की देवियों में, मां वैश्णो देवी और सांई बाबा में अधिक आस्था देखी। खैर जब मैं इस बार हैदराबाद में था तो बाला जी के मन्दिर को देखने का मन बना लिया। तिरूपती को हर दिशा से गाड़ियां आ रही थी। जो गाड़िया तामिलनाडू से आ रही थी उस में अधिकतर लोगों ने काले वस्त्र धारण किये हुये थे। और जो गाड़ियां आंध्रा प्रदेष और तेलेंगाना से आ रही थी उन में अधिक लोगों ने पीले वस्त्र धारण किये थें। मैने वहां के लोगों से बात करके जानना चाहा कि यह खास वस्त्र क्यों। जो उन्हाने बताया वह वही संदेश देता है जो कि ईश्वर के दर्शन बारे में शास्त्र देते है।

उन श्रधालुओं का कहना था कि जो भी दर्शन के लिये जाता है वह पहले अपने आप को इस महान और पुण्य कार्य के लिये तैयार करता है। चमक दमक से दूर सादे वस्त्र होने चाहिये। इसी तरह खाने में निरमिष भोजन से कई दिन पहले से ही दूर रहा जाता है और केवल सादा शाकाहारी भोजन ही थोड़ी मात्रा में ग्रहण किया जाता है।। और लोग भजन आदि गाते हुये आते हैं। वहां मैने पक्तिं में खड़े हुये भी देखा कि लोग लगातार गाोविंदा के नारों के साथ भजन कर रहे थे। कहने का भाव है कि जब वे अपने भगवान से मिलने जाते है तो संसारिक वृतियों से दूर रहने की कोशिश की जीती है। इस बारे में मुझे वेद शास्त्रों की बाते पढ़ने और सुनने का मौका भी मिलता रहा है। जो बाते मैने उन लोगों से सुनी वह सब मुझे शास्त्रों कही हुई बातों के नजदीक लगी चाहे यह symbolic बन कर रह गई हैं।

शास्त्र इस बारे में कहते है कि जिसे हम ईश्वर कहते हैं या मानते हैं जिसे हम उपासना के योग्य मानते हैं और जिसकी उपासना और अराधना करते है उस से मिलने की चाह स्वभाविक है, वैसे ही जैसे कि मैं उन श्रधालुओं में देख रहा था। यही नही हम उसके अधिक से अधिक नजदीक रहना चाहते हैं। अब प्रश्न उठता है, कौन उसके दर्शन पा सकता है? इसके उत्तर में कहा गया है जिसकी वृतियां संसारिक विष्यों में लिप्त हैं, ऐसा मनुष्य भगवान को तो क्या अपने आप

को भी नहीं देख पाता। ऐसा इस लिये है, क्योकि चित की वृतियां उसे भटकाती फिरती हैं, कभी एक वस्तु में तो कभी दूसरी वस्तु में ले जाती हैं। मन की तेज रफतार, आत्मा को परमात्मा से नहीं मिलने दे रही। जब आत्मा, परमात्मा से दूर है ऐसे में भगवान के दर्शन नहीं हो सकते।

अत ऐव भगवान के दर्शन वही कर सकता है जिस ने चित की वृतियों को और मन को अभ्यास व वैराग्य द्वारा वश में किया हुआ है। उन श्रधालुओं ने भी स्वयं को वैसे ही तैयार किया था यह अलग बात है कि वे चिन्ह मात्र रह गई है। अब हम देखतें हैं हमारे उपनिषद शास्त्र इस बारे में क्या कहते है।

कठोपनिशद में कहा है---

1 जो ज्ञानवान नहीं है, जिसका मन व इन्द्रियां वश में नहीं हैं वह भगवान के दर्शन नहीं कर सकता अपितु जन्म मरण के चक्र में ही रहेगा।

संसार में अधिक संख्या उन लोगों की है जो आत्म बल से वंचित है व प्रमाद और आलस्य में फंसे हुये हैं वे इस शरीर को ही सब कुछ समझते हैं और इस की पूजा में लगे रहते हैं, जिन्होने यह निश्चय कर रखा है जैसे भी हो धन कमाओ और खाते कमाते ही मर जाओ, जिनको इतना भी ज्ञान नहीं है कि जो चीज़ बनी है वह समाप्त भी होगी, ऐसे लोग न तो आत्म दर्शन कर सकते है और न ही भगवान के दर्शन।

2 जिसका व्यवहार दूसरों के प्रति क्रूरता, दम्भ और छल कपट का है, जिनकी वाणी वश में नहीं है, जो ईष्या द्वेष की आग में जल रहें हैं, ऐसे लोग भी भगवान को नहीं पा सकते।

3 प्रभु दर्शन वही कर सकते हैं जो आत्मबल बढ़ाने के लिये ब्रहमचर्य का पालन करते हैं। जो अहिंसा व सत्य के मार्ग पर चलते हैं। जो संसार के पदार्थो को अपने जीवन की यात्रा का एक साधन मानते हैं। वासना की आग को वैराग्य की राख से दबा कर रखते हैं। जिनका मन शान्त है व अंहकार जिन से कोसों दूर है। जो शरीर से स्वस्थ है।

आगे कठोपनिषद में लिखा है---यह संसार वासनारूपी जल से भरा हुआ है परन्तु हे मनुष्य तू ज्ञानरूपी नौका में सवार होकर पार जा सकता हैं अर्थात ईश्वर को जान सकता है। ऐसा ज्ञान जो तुझे चित की वृतियां और प्रमाद व आलस्य से बचाय रखे।

एक लेखक के अनुसार

हर जगह मौजूद है पर वह नजर आता नहीं।
योग –साधना के बिना, उसको कोई पाता नहीं।।

व्यवहारिक बात यह है कि न तो कोई दुनिया को छोड़ सकता है न दुनिया किसी को छोड़ती है। प्रयत्न यह होना चाहिये कि दुनिया के सारे व्यवहार करते हुये अपनी वृति को इसके जाल में फंसने न दिया जाये।

तुलसी ने इस बात को बहुत सुन्दर कहा है,
तुलसी जग में यों रहो, त्यों रसना मुख माहि।
खाती है घी तेल नित, फिर भी चिकनी नाहीं।

इस विषयों से भरे संसार में वैसे ही रहें जैसे मुंह के अन्दर जिव्हा है। वह तेल घी सब खाती है, फिर भी उस पर चिकनाहट नहीं आती।

भगवान कृष्ण अर्जुन से कहतें हैं जो चित योगाभ्याास से युक्त है वह वृतियां और प्रमाद व आलस्य पर विजय पाता हुआ परम दिव्य पुरूष को प्राप्त होता हैं।

*****

WHAT MONEY CAN'T BUY

Money can buy you a house, but not a home.
Money can buy you an exotic bed, but not sleep.
Money can buy you books, but not wisdom.
Money can buy food but not appetite.
Money can buy you medicines but cannot fully guarantee you health.
Money can buy you companions but not real friends.
Money can buy you position, but not respect.
Money can buy you jewellery but not inner beauty.

"We are not rich by what we possess but by what we can do without".

Philosopher Socrates would go to marketplaces and buy nothing. He would tell his disciples how good it feels to be happy without these things.

Family, friends and the many relationships we have are those that money can't buy. Cherish the things in your life that money did not buy you. You will be lot more happy.

When you feel more blessed to have received, become more generous to share. When you feel more blessed that you have shared, pray that you may receive more that you can share more. That's the way to live happily.

Your barns won't go empty because God fills barns that stock up portions for those in need. "Give and it will be given to you. A good measure, pressed down, shaken together and running over, will be poured into your lap. For with the measure you use, it will be measured to you."

*****

लक्ष्मी के स्वरूप को समझने की आवश्यकता है

हमारे पौराणिक भाईयों ने लक्ष्मी की प्रतिमा बनाई है। शायद यही एक प्रतिमा है जिसे मैने बहुत सारे दूसरे धर्मो और मतों वालों को भी आदरभाव से लगाते हुये देखा जिन में हमारे आर्य समाजी भी है। कारण घन हर किसी को सब से प्यारा है, उसके आगे सिद्धान्त फीके पड़ जाते है।

मुझे एक पण्डित जी के साथ कुछ समय बिताने का समय मिला। उनका कहना था कि लक्ष्मी की प्रतिमा की पूजा तो सभी कर रहें हैं ताकी अधिक से अधिक धन प्राप्त हो पर जो वह प्रतिमा बता रही है उस के अर्थ को जाने बिना। संस्कृत में लक्ष्मी शब्द का अर्थ है ——उदेश्य। इसलिये लक्ष्मी केवल घन न होकर आपके जीवन का उदेश्य है। प्रतिमा में उसकी चार भुजायें बताई जाती है। प्रतिमा को कमल पर खड़ा हुआ बताया गया है। यह चार भुजायें जीवन के चार पहलुओं की और संकेत कर रही है।

पहली भुजां घर्म के महत्व की और संकेत कर रही हैं। धर्म का अर्थ है न्यायपूर्ण व्यवहार, दूसरी भुजा बता रही है – घर्म पर चलते हुये धन को कमाना, तीसरी भुजा बता रही है उस धर्म द्वारा कमाये धन से काम की पूर्ती , काम का अर्थ है हमारे जीवन की ठीक आवश्यकताओं की पूर्ती और चोथी भुजा मोक्ष की और संकेत कर रही है कि अंतिम उदे य परम आनन्द हो जो की तभी सम्भव है जब इन इच्छाओं से आदमी बाहर निकतना है। लक्ष्मी को कमल के फूल पर खड़ा बताया गया, जिसका अर्थ है जैसे कमल पानी में उगता है फिर भी पानी से उपर रहता है वैसे ही आप भी संसार में रहते हुये संसारिक वैभव के साथ जुड़ न जायें, दूर रहें।

*****

सम्पादक के नाम पत्र

सम्पादक महोदय

आपका लेख '' क्या यह दयानन्द का आर्य समाज है'' पढा। बहुत सही लगा। पर मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि हम आर्चायों को पौराणिक कर्मकाण्ड का सहारा क्यों लेना पढ़ता है।

हमारे रहे खुचे नबे प्रतिषत आर्य समाजीयों का भी यह मानना है कि यदि आर्य समाजी होने के लिये हवन में शामिल या आहुतियों देने तक सीमित है तव तो हम कर लेंगे पर हमें लक्ष्मी पूजन, करवा चौथ का वर्त, पण्डित को पूछ कर ही शादी विवाह की तिथी तय करना, श्राद्ध करना करवाना, मृत्युंजय मन्त्र का मृत्यु को रोकने के लिये पाठ आदि के लिये न रोका जाये। आर्य समाज के अधिकारी खुद यह सब कार्य करवातें हैं ताकि आर्य समाजों को कुछ आय हो।

जहो जक मेरा अनुभव है, इस श्रेणी मे आर्य समाजों के 95 फिसदी अधिकारी भी आते है। इसीलिये आर्य समाज के पुरोहित भी यह सब करते है। उन्होने तो भी पेट भरना है। यह गुरूकुलों के ठेकेदार गुरूकुलों में डालकर पुरोहित तो बना देते हैं पर नौकरी थोड़े भी दिलवाते है। कुछ को अच्छे विद्यालयों में शिक्षक का कार्य मिल जाता है बाकी तो धक्के ही खाते हैं और इन पौराणिक कर्मकाण्डों का सहारा लेकर अपना और परिवार का पेट भरते है।

यह सत्य है कि यह दयानंद का आर्य समाज नहीं है जिसने सारा जीवन पाखण्डों अन्धविष्वासों के विरूध संघर्ष में लगा दिया, और आर्य समाज को उस कार्य को आगे ले जाने के लिये बनाया था। वह आर्य समाज तो लगभग 100 साल पहले खत्म हो गया था। आर्य समाजों की विशाल सम्पति न हो तो यह अधिकारी भी आपको देखने को नहीं मिलेंगे। और मौटी दक्षिणा न मिले तो यह प्रचारक भी ढूढें नहीं मिलेंगें। इन प्रचारकों में आर्य समाज के लिये या दयानन्द के लिये इतना दर्द हो तो उन्ही आर्य समाजों को क्यों ढूंढते हैं जिनके पास पैसा है और मोटी दक्षिणा देते है। उन आर्य समाजों में क्यों नहीं जाते जो दक्षिणा नहीं दे सकते और बन्द हो रही है।

आप सत्य कह रहें कि यह जो आप देखते हैं यह तो विश्व हिन्दु परिषद, राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ का ही एक अंग है। आर्य समाजी तो अब है ही नहीं जो दिख रहें हैं वह आर्य समाज के नाम पर रोटियां सेकने वालें है।

विनय कुमार शास्त्री,
खुर्जा, बुलन्दशहर
उतर प्रदेश

*****

मनुष्यों को तीन श्रेणीयों में बांटा जा सकता है

पहली श्रेणी मे वे हैं जो आत्मा की आवाज को किसी भी हालत में अनसुना नहीं करते। जिस काम के लिये आत्मा हां करती है उसे ही करते हैं। आत्मा परमात्मा में रत रहती हैं। ऐसे व्यक्ति उच्चतम श्रेणी में आतें हैं।

दूसरी श्रेणी में वे हैं जो मन की तो करते है पर आत्मा की भी सुनतें हैं। आत्म चिन्तन और आत्म निरीक्षण करते रहतें है। ऐसे लोग अपने स्वार्थ के लिये दूसरे का बुरा नहीं करते क्योंकि आत्मा की आवाज कुछ नियन्त्राण रखती है।

तीसरी श्रेणी में वे हैं आत्मा की आवाज को नहीं सुनते हैं और आत्म हनन करतें रहते हैं। ऐसे व्यक्ति निकृष्ठ व अधम श्रेणी के कहलाये जाते हैं। जो भी समाज में अधर्म और बुराईयां है, इन्ही व्यक्तियों के कारण हैं।

हमें यह याद रखना चाहिये कि ईश्वर सब की आत्मा में बैठा है और प्रत्येक कार्य से पूर्व सब को सत्योपदेश कर रहा है। जो व्यक्ति उसके संकेत को समझ लेता है और उस के अनुरूप चलता है यह बहुत सी बाधाओं से बच जाता है। केवल मात्र ईश्वर को मानने से प्रयोजन सिद्ध नहीं होता बल्कि महत्व है कि हम इस का कितना लाभ ले रहे हैं।

ASHOK VATIKA IN SRI LANKA

Bhartendu Sood

Like most of the Indians I grew up listening& reading Ramayana and seeing it being enacted every year during the *Navratras.* So, it was but natural that when I was inSri Lanka, a curiosity made waves in me to know where exactly 'Ashok vatika' was, a place in Lanka where according to Ramayana *'Seeta'* was kept in confinement by the King *Ravana.* Yes, after reading books of a few historians, a doubt persisted whether the Lanka which was referred to in Ramayana was the same kingdom or was it somewhere else.

Shri Bhakta Hanuman Temple, Rambodha

When I talked to my friend in Sri Lanka, he not only guided me to reach*Seetha Eliya,* where *Ashok Vatika* is located but also asked me to visit Ram Boda, where Hanuman put his foot on landing in Lanka and now has a beautiful temple by the name Shri Bhakata Hanuman temple, constructed by Chinmaya Mission. My visits to the oldest Buddhist temples in Kaliniya, Colombo and Anuradhapur had given enough indication that nothing reliable was known about Sri Lanka's history of the period before Buddha's visit to these places in 250 B.C. But, there was a reference of the king by the name Bibhishana, who had earned name for his benevolent acts, (not the one who was the brother of Ravana and deserted him to join Ram in the final battle) but then the names of good persons travel down the ages as we have Ram and Krishna in all the times.

Seetha Eliya is eight KMs from Nuwara Eliya, a beautiful hill station, about 200 Kms from Colombo and 80 Kms from Kandy, another beautiful city on the hills. Ram Boda where Hanuman temple is located is between Kandyand Nuwar Eliya. When I was moving from Kandy to Seetha Eliya it reminisced me of my journey to Darjeeling with high mountains covered in a green sheet of tea plants on one side and streams and rivulets on the other side of the road.

Though, Shri Bhakta Hanuman temple is a new structure but its serenity and ambience attracts you towards it. It's a temple in the real sense because

Chinmay Mission management is imparting vocational training to the hundreds of the females of Ram Boda. It has a beautiful large idol of Hanuman in black stone and the basement houses the idol of Ganesha.

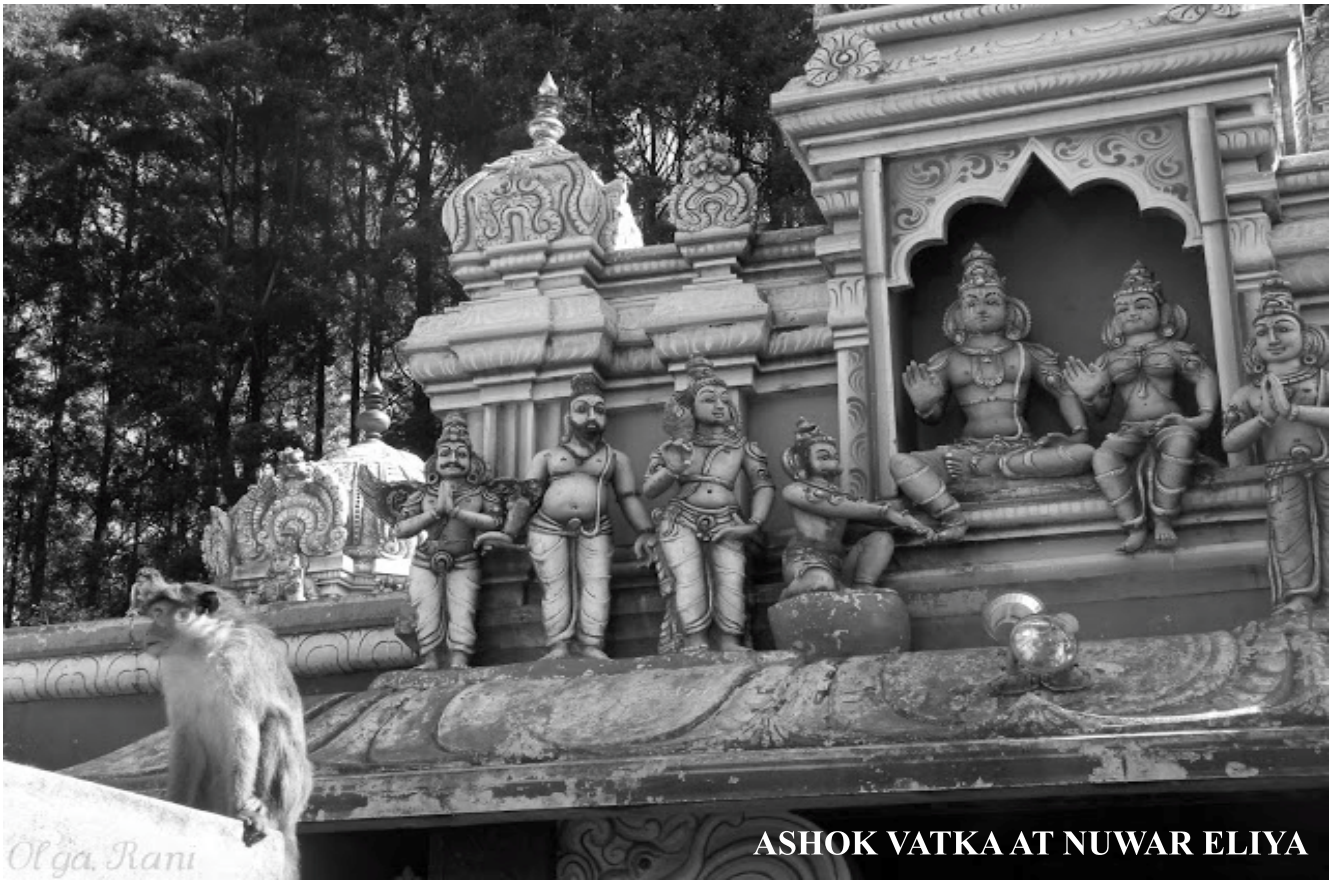

ASHOK VATKA AT NUWAR ELIYA

From Ram Boda, it takes one hour to reach Seetha Eliya. It is on Nuwara Eliya –Galle highway. When I stepped in to this temple, I had a feeling which can't be put in words, something I had not experienced even when I had visited Ayodhaya. The idols of Ram, Laxman, Seeta and Hanuman, though appeared more than a thousand years old, housed in a very ordinary structure, fill you with awe. A gushing stream of ice cold water touches the boundary of this small temple and a thick cluster of trees covers it from the top. The beauty of Seetha Eliya is breath taking; there is a beautiful Haggala garden at a distance of 1 KM. What really impressed me that almost every one passing through that road would stop his vehicle, get down and would resume his journey after paying obeisance. When I asked a Sinhalese woman if she knew something about the significance of this temple, her innocent reply was "Your goddess someone Seetha lived here". Tamil Pujari in the temple performs rituals and Pooja in his own language.

Near by, there are Ravana Eliya and Khumbhkarna Eliya, though no signs of palaces. Then there is a temple of Kartik Rishi, son of Lord Shiva at a distance of 100 KMs which I couldn't visit.

When I returned, all my doubts had dispelled and I was convinced that it is simply not mythology, it is this Lanka which is a part of our cultural heritage.

*****

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें

पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English

कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता

हमदर्द, डबार,

वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगड़ी,

कामधेनु जल व अन्य

आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

दरिया ने झरने से पूछा,
तुझे समन्दर नहीं बनना है क्या,
झरने ने बड़ी नम्रता से कहा,
बड़ा बन कर खारा हो जाने से अच्छा है,
कि मैं छोटा रह कर मीठा ही रहूं

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

क्या कर्मकाण्ड पूजा का अभिन्न अंग है?

डा. महेश पोरवाल

बुद्धिजिवियों का एक खास वर्ग है, जिस में कि इस पत्रिका के सम्पादक भी आते हैं, जो कि कर्मकाण्ड को ईश्वर अराधना का जरूरी हिस्सा नहीं मानते । पर हमारे समाज का बड़ा वर्ग यह मानता है कि कर्मकाण्ड ईश्वर अराधना का जरूरी अंग हैं। कई लोग तो यहां तक विश्वास करते हैं कि अगर कर्मकाण्ड ठीक ढंग से नहीं किया गया या कोई कमी रह गई तो न केवल ईश्वर अराधना असरहीन होगी बल्कि ईश्वर के नाराज होने का भी खतरा है। बहुतो का मानना है कि अगर कर्मकाण्ड ठीक ढंग से नहीं किया गया तो ईश्वर का अपमान है। उसी तरह जैसे अतिथी को उचित स्थान दिये बगैर खाना देना।

जो कर्मकाण्ड की वकालत करते हैं उनका कहना है कि हिन्दु धर्म में ही नहीं बाकी सभी सामर्पदायों में भी कर्मकाण्ड है यहां तक कि महात्मा बुद्व कर्मकाण्ड के विरूद्ध थे पर आज जो बुद्व धर्म माना जाता है वह भी कर्मकाण्ड से भरा हुआ है। उनका कहना है कि ईश्वर के प्रति श्रद्धा पैदा करने के लिये कर्मकाण्ड बहुत आवश्यक है। मन्दिर, गुरूद्वारे, मसजिद और चर्च इसी लिये बनाये जाते है और उनमें ऐसा वातावरण तैयार किया जाता है कि आने वाले को लगे कि ईश्वर मिलन का यह उपयुक्त स्थान है। जैसे कुछ खाये बिना पेट नहीं भरता वैसे ही ईश्वर की स्तुती में कुछ किये बिना आत्मा की भूख नहीं मिट सकती। वे ज्ञान इन्द्रियों के स्थान पर कर्म इन्द्रियों के सक्रिय होने पर विश्वास करते हैं। जब कि कर्मकाण्ड के बिना ईश्वर की स्तुती तो ज्ञान इन्द्रियों का ही सब काम है। यह भी सत्य है कि कि जब कर्म इन्द्रिया सक्रिय हो गई तो ज्ञान इन्द्रियों का काम नहीं रह जाता। उदाहरण के लिये आपने अग्निहोत्र के दौरान आहुती देनी है। आपकी सभी कर्म इन्द्रियां सक्रिय रहेंगी। चमच को उठाना, उसे में पात्र से घी को भरना, उस समय का ईन्तजार करना जब कि चमच को हवन कुण्ड में उलटाना है। यह तो है आम व्यक्ति के लिये जो असली कर्मकाण्डी होगा वह यह भी निश्चित करेगा कि चमच को कैसे डालना है और क्या दिशा देनी है। इस में ज्ञान इन्द्रियों का रोल खत्म है।

पर प्रश्न है कि आपका पेट तो भर गया पर क्या जिस ईभवर के लिये यह सब किया उस का पेट भी भरा? क्या ईश्वर को इस सब की आवश्यकता थी। आपने स्वादिष्ट मिठाई परोसी, क्या इस की आवश्यकता थी या किसी ने उस ईश्वर के आगे किसी प्राणी की बली दी । क्या इस से ईश्वर प्रसन्न हुआ। क्या कहना है उनका जो मानते हैं कि सब प्राणी उस ईश्वर की ही सन्तान है।

सच्चाई यह है कि ईश्वर को बिना किसी कर्मकाण्ड के ही मानने और स्मरण करने के लिये बहुत अधिक ज्ञान की आवश्यकता है। इसके लिये बहुत गहरी सोच, मनन और अध्यातिमक ज्ञान की आवश्यकता है जो कि आम व्यक्ति के लिये सम्भव नहीं। पर वह आम आदमी ईश्वर को भी स्वभाविक रूप से मानना चाहता है। उसे अपने जीवन का अंग बनाना चाहता है । उसे एक भाक्ति के रूप में देखता है जिस से वह

उस सब को मान सके जो कि भौतिक संसार में उसे नहीं मिल रहा। वह उसे एक चमतकारी के रूप में देखता है। जों उसे संसार के न्यायालय न्याय प्रदान नहीं करते वह उस भाक्ति से उस की उमीद करता है। इस लिए आम व्यक्ति कर्मकाण्ड में ही सुतुष्ट है और वह यह भी चाहता है कि यह सब कर्मकाण्ड ठीक ढंग से हो ताकी ईश्वर नाराज न हो जायें , यही नहीं वह यह भी चाहता है कि कोई जानकार व्यक्ति उस के लिये यह कर्मकाण्ड कर दे। इसी लिये पण्डितों, मोलवियों, ज्ञानियों और पोपों की एक बड़ी फोज सामने आई। क्योंकि ये सभी तो राजाओं के राजा ईश्वर के ऐजेण्ट माने जाते हैं इसलिये उनका मान भी दूसरों से अधिक है। खैर इन ऐजेण्टों का पेट भी तभी भरेगा अगर कर्मकाण्ड में दान दक्षिणा होगी।

यही नहीं कर्मकाण्ड का भी अपना ही आनन्द है। लोग गंगा आरती का आन्नद लेने के लिये हजारों मीलों से जाते है। बड़े बड़े मदिरों में खास आरती देखने वाली होती है। इसकोन में कृष्ण नृत्य, जगन्ननाथ रथ यात्रा एक आकर्षण है। इन्ही को देखते हुये आर्य समाज द्वारा बहु कुण्डिय हवन लाये गये। अब वे भी आर्कषण होते है। हिन्दं धर्म में लोगों का मानना है कि भगवान की पूजा में आंनद और मनोरंजन दोनो हो।

इसलिये यह मान कर चलें कि साधारण व्यक्ति जो कि संसारिक कामों में लगा है उस के लिये कर्मकाण्ड ईश्वर अराधना का अभिन्न अंग रहेगा। पर यह आप पर निर्भर करता है कि आप अपने को अघ्यात्मिक तौर पर इतना उपर उठा ले कि इस कर्मकाण्ड की ईश्वर उपासना के लिये आवश्यकता मालुम न करे, परन्तु यह काम आसान नहीं । इसे समझने के लिये ऋषी दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश में उपासना द्वारा मुक्ति को पढ़े।

*****

The art of listening - *A problem shared is a problem halved'*

Most of us are fortunate to be born with the power of speech. Therefore, we can communicate easily with others. But the art of attentive listening takes many years of skilled training and practice.

Often someone says to us, “I have a problem at work or with my spouse or children.” Then, our first impulsive reply to them is: “We all have problems.” We are, by nature, afraid of getting involved with another's life.

The skilled counsellor, on the other hand, will say “Is that so? Would you care to share your problem with me? Perhaps, I can make some suggestions that will help you cope.”

The counsellor, who has been trained in active listening, is willing to lend an empathetic ear to others and their difficulties. Of course, all problems seem serious to those who believe they have a problem.

It is by sharing the problem with an empathetic listener that the problem-bearer gets relief. According to a proverb, 'A problem shared is a problem halved'. What is it that makes the person who has a problem reluctant to share?

It may be pride or fear of being ridiculed or that the listener will refer them to a psychiatrist. In reality, very few people - apart from those with mental disorders - need to visit a psychiatrist unless medication is required. In fact, many psychiatrists nowadays employ counsellors to help them segregate the patients who really need medication from those who merely need an attentive listener.

This is very obvious within family circles. There is always one of the parents to whom the children will turn to tell their problems and difficulties. They know whether it is the mother or father who has the time, energy and patience to listen to them and extend help, if help is required.

Children have an inborn instinct to turn to whichever of the parents who has the capability to help them solve their difficulties. As so many couples go out to work in the modern world, it may be the father, rather than the mother, “who is always there for the children” to be present when the need is urgent is all that is required.

*****

किसी भी प्रकार की ऊँचाई पर पहुँचने के लिए ज़रूरी है कि अतिरिक्त सामान अथवा बेकार के विचारों से मुक्ति

जब भी हम ऊँचाई पर स्थित किसी स्थान पर वि ोश रूप से ट्रैकिंग वग़ैरा के लिए जाते हैं तो हम अपने साथ कम से कम सामान ले जाते हैं। ऊँचाई पर चढ़ते समय यदि ज़्यादा सामान साथ होता है तो चढ़ाई में दिक़्क़त आती है अतः फालतू सामान या तो घर पर ही छोड़कर आते हैं अथवा बेस कैंप में छोड़ देते हैं। ट्रैकिंग के दौरान ही नहीं हर तरह के सफ़र में जितना कम सामान होता है सफ़र में उतना ही अधिक आनंद आता है। इसी तरह से जीवन में ऊँचाई पर पहुँचने अथवा जीवन रूपी सफ़र को आनंददायक बनाने के लिए भी फालतू सामान को छोड़ देना ही श्रेयस्कर है। प्र न उठता है कि वो कौन सा सामान है जो जीवन में ऊँचाई पर पहुँचने अर्थात् हमारी उन्नति में बाधक होता है जिसे जीवन रूपी सफ़र को आनंददायक बनाने के लिए छोड़ देना चाहिए और वो कौन सा सामान है जिसे साथ रखना चाहिए?

(As far as we know, picture is public domain)

मनुष्य का जीवन अमूल्य है जो बेकार की बातों में गँवाने के लिए नहीं है। लेकिन हम ऐसा ही करते हैं। हम प्रायः छोटी–छोटी और महत्त्वहीन बातों में उलझे रहते हैं। निरर्थक व महत्त्वहीन बातों को अपनी प्रतिश्ठा का विशय बनाकर जीवन भर उनसे जूझते रहते हैं। यदि हम बेकार की बातों में ही अपना बहुमूल्य समय नश्ट कर डालेंगे तो फिर बड़े व महत्त्वपूर्ण कार्य कब करेंगे? जीवन में किसी भी प्रकार की ऊँचाई प्राप्त करने के लिए चाहे वह भौतिक जगत से संबंधित हो अथवा आध्यात्मिक जगत से संबंधित हो हमें बेकार की बातों और आदतों से छुटकारा पाना ही होगा। हमें अपनी उन सभी ग़लत आदतों से मुक्ति पानी होगी जो हमें निरर्थक कार्यों में उलझाए रखती हैं और हमारा बे ाक़ीमती वक़्त ख़राब करती रहती हैं। यदि हमें सचमुच ऊँचाई पर पहुँचना है तो हमें महत्त्वपूर्ण कार्य करने होंगे। जीवन में महत्त्वपूर्ण व बड़े कार्य करना तभी संभव होगा जब हमारे विचार बड़े हों। हमें अपने विचारों क ो स ंक ुच ित दृश्टिकोण से मुक्त करके उन्हें उदात्त दृश्टि प्रदान करनी होगी।

हमारी उन्नति में सबसे बड़ी बाधा हमारे

नकारात्मक विचार ही होते हैं। नकारात्मक विचारों के कारण हममें बड़े व महत्त्वपूर्ण कार्य करने का वि वास पैदा नहीं होता। नकारात्मक विचारों से मुक्ति पाने के लिए हमें सकारात्मक विचारों का सहारा लेना होगा। हमें अपने अंदर वि वास पैदा करना होगा कि हम उपयोगी व महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं। नकारात्मक विचारों के कारण ही हमारा स्वभाव व आचरण दूशित हो जाता है। नकारात्मक विचारों के कारण ही हममें विकार उत्पन्न हो जाते हैं। यदि हमारा स्वभाव व आचरण अच्छा होगा व हम विकारों से मुक्त होंगे तो सभी से हमारे संबंध भी अच्छे रहेंगे और अच्छे संबंधों के कारण हर कार्य में सफलता भी प्राप्त होगी और इसके लिए जीवन में सकारात्मकता अनिवार्य है। सकारात्मकता के विकास के लिए जीवन में उदात्त मूल्यों व स्वयं की भाक्तियों में पूर्ण वि वास उत्पन्न करना अनिवार्य है। नकारात्मक दृश्टिकोण व निरा ाजनक विचारों, अज्ञान, अहंकार, राग–द्वेश, अनास्था आदि विकारों के भार से मुक्ति पाकर ही हम वास्तव में अपेक्षित ऊँचाइयाँ प्राप्त करने में सक्षम हो सकेंगे इसमें संदेह नहीं।

अगर हम जीवन को महान ऊँचाइयों तक ले जाना चाहते हैं तो हमें ऊँचे लक्ष्य निर्धारित करने होंगे। लक्ष्य जितने ऊँचे होंगे चुनौतियाँ भी उतनी ही बड़ी होंगी। बड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए स्वयं को तैयार करना होगा। हर कार्य के लिए उर्जा अपेक्षित है। यदि हम बेकार के कार्य करते रहेंगे तो इससे हमारी उर्जा का ह्रास व अपव्यय होता रहेगा जिसके परिणामस्वरूप महत्त्वपूर्ण कार्यों को करने के लिए उर्जा बचेगी ही नहीं। ऐसे में हम चाहकर भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं कर पाएँगे। बड़ी चुनौतियों का सामना करने के लिए उर्जा की बचत करनी होगी जो महत्त्वहीन व निरर्थक कार्यों से मुक्ति द्वारा ही संभव है। हमारी जीवन रूपी नौका डगमगाने या डूबने लगे उससे पहले हमें उसमें लादी गई नकारात्मक विचारों व निरर्थक कार्यों रूपी अतिरिक्त सामग्री को फेंकना प्रारंभ कर देना चाहिए।

सीताराम गुप्ता,
ए डी–106–सी, पीतम पुरा,
दिल्ली–110034
फोन नं 09555622323
ईमेल रू`तहनचजं54/लीववण्बवण्पद

*****

To Create businesses of tomorrow, allow new ideas to come

In today's business world where everything including technology is changing fast the importance of innovating fast and keeping pace with tomorrow needs to be understood.. “The pace of change has picked up. In the digital world, new things are coming every year. The investments you made three years ago are not good enough,"

And to build for the future, one needs to allow new ideas to come. It is necessary to work on these ideas. Many of those projects will fail. But it's okay.
This can be better understood with the concept of rice farming. When rice farming is done seeds are sprinkled. After 30 days, buds are plucked. The bad ones are thrown out and the good ones are planted to grow the crop.

Same method has to be adopted for new ideas and proposals. All ideas must be tested. The good ones should be retained and the bad ones tossed out.

*****

वैदिक थोटस और महर्षि दयानन्द बाल आश्रम द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के 194 जन्म दिवस पर रविवार 19 फरवरी को P.G.I में लंगर का आयोजन किया गया।

शहर के बिभिन्न आर्य समाजों के श्रधालुओं ने व कुछ दूसरे व्यक्तियों ने भी इस सेवा कार्य में हिस्सा लिया और यह भी तय किया गया कि आर्य समाज के उदेश्य ———संसार का उपकार करना आर्य समाज का परम धर्म है, को साकार करने के लिये,ऐसी ल्रगर की सेवा नियमित रूप ये करते रहेंगे। हम यह भी चाहते हैं कि यह सभी आर्य समाजों के लिये प्रेरणासूत्र वने। हमारे मोजूदा ढंग दयानन्द और आर्य समाज के संदेश को नई पीढ़ी तक ले जाने में पूरी तरह असफल हो गये हैं। जहां कुछ सालों पहले तक ऐसे अवसरों पर सैंकड़ों श्रधालु होते थे आज आयोजनों पर हजारों में खर्च कर भी 30 व्यक्ति इकठठे करना मुश्किल हो गया है, यह 30 भी वे होते हैं जो 40——50 साल से आर्य समाज आ रहे होते है, अधिकतर बिभिन्न समाजों के अधिकारी।

हम इस बात को भूल चुके हैं कि मानव सेवा और दुखियों की सेवा द्वारा ही अपनी बात बताई जा सकती है। इस लिये अच्छा होगा सभी आर्य समाज, चाहे किसी भी शहर या कसवे में है, इस दिन भवनों के अन्दर प्रोग्राम करने के स्थान पर बाहर निकल कर कल्याण कारी कार्य करे। इन विद्वान कहे जानों की बातें सुनते सुनते तो बूढ़े हो गये। अच्छा हो हम भी किसी को आर्य समाज की बात सुनाये और मानव कल्याण में लगे। अपने सिक्ख भाईयों से कुछ सीखें। तभी दयानन्द का नाम लोगों को पता लगेगा। यही उनके जन्म दिन पर उचित श्रधांजली होगीं।

हम आपकी हर प्रकार से सहायता करने को तैयार है। जितनी दक्षिणा आर्य समाज वाले आप अपने ऐक विद्वान को देते हैं, उतने में तो 1000 आदमियों को खाना खिला सकते है।

Bhartendu Sood
Editor & Publisher
Vedic Thoughts, 9217970381
Neeraj Kaura, Manager,
Dayanand Bal Ashram, Mohali

*****

सम्पादकिय-2

भारत को ट्रम्प की बेबुनियाद अलोचना से दूर रहना चाहिये।

चाहे कोई भी देश हो वहां के राष्ट्रपती या प्रधानमन्त्री को अपने देश के हित के बारे में सोचने का पूरा अधिकार है। उस हित में देश के लोगों के जान प्राण और माल की सुरक्षा भी आ जाती है। यह भी सही है कि अमेरिका का सारे विश्व पर ऐसा प्रभाव है कि वहां के राष्ट्रपती से यह अपेक्षा की जाति है कि वह अपने देश के लिये नितियां तय करते हुये सारे विश्व के दशेों का लोगों का ख्याल रखे। परन्तु यह भी सत्य है कि ट्रम्प " अमेरिका पहले " के नारे की वजह से ही जीत पाये और यौरप और अमेरिका में बड़ते हुये इसलामी आतंकबाद को देखते हुये उन्होते अपनी चुनावी घोषणा में ही मुसलमानों के अमेरिका में दाखिल होने पर सख्त पाबंदियों की बात कही थी और वहां के लोगों ने इस का समर्थन किया, वरना ट्रम्प जीतते ही नहीं।

अब जब वह अपने चुनावी वायदों को पूरा करने के लिये कदम उठा रहें हैं तो हमे तकलीफ क्यों हो रही है। उन्होने भारतीय मुसलमानों पर तो यह रोक लगाई नहीं है। तब कि भारत में 25 करोड़ मुसलमान रहते है। यह रोक सिर्फ 7 दशों पर है औा ये वो दश हे जो कि आतंकबाद के कारखाने हैं। पर इस कदम का प्रभाव बहुत बड़ा होने वाला है। जिन पर रोक नहीं लगी है वे भी पहली बार कुछ सहमें हुये नजर आ रहें है। आप हमारे पड़ोसी देश पाकिस्तान को ही ले लें। इतने सालों में सब के कहने के बाबजूद जिस में ओबामा भी आ जाते है, उसने हफीज सईद पर कोई कारवाई नहीं की पर ट्रम्प के एक झटके से उसने कारावाई शुरू कर दी है। जब कि हफीज सईद पर चीन का भी पूरा हाथ है।

यह भी सत्य है कि आज तक मुसलमान इन आतंकियों के विरूद्ध खुलकर नहीं आये, और उस में भारत के अधिकतर मुसलमान भी शामिल हैं कारण वे अपने धर्म को दूसरी सब बातों से उपर रखते हैं और उन्हें यह लगता है कि ये आतंकी धर्म की लड़ाई में ही लगे हुये है। हो सकता है कि ट्रम्प के इस झटके के बाद उनके रूख में भी कुछ परिवर्तन आये।

हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी आर्थिक लाभ हानी को एक किनारे रख, ट्रम्प का पूरा साथ दें। यही भारत के हक में है। पर मुश्किल यह है कि उदारवादिता में आज हमारे प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी नेहरू से भी दो कदम आगे निकलना चाहते है। जहां तक आर्थिक लाभ हानी का प्रश्न है, It is the survival of the fittest अगर हम दूसरों से कम खर्चे पर सेवायें या अपना माल देने के सक्षम होगें तो हमारा माल स्वयं बिकेगा। आई टी में हमारा दवदवा है जिसे चीन भी नहीं तोड़ सका,वह रहेगा ही क्योंकि हमारे आई टी से जुड़े उद्योगपति आगे की चुनोतियों से परिचित है और उस दिशा में कदम ले रहें है। दूसरा हमारी अग्रेजी का अच्छा ज्ञान हमारे बच्चों के लिये आई टी में काफी सहायता कर रहा है।

*****

Editorial-2

Budget signifies Govt.'s endorsement that demonetization has pushed back the economy

Without any doubt demonetization has been the biggest event of the year 2016. Our Government, especially our PM was seen thumping his chest about its success in cleansing our economy of the balck money. So it was expected that this issue will grab the headline of our Finance Minister's budget speech and he would highlight the benefits demonetization has brought to the economy. But he chose to remain silent. Therefore, it is not difficult to infer that tangible gains of demonetization are negligible when compared with the ruins it has brought with it. Fall in the current and projected GDP growth rates itself tells the whole story.

On the other hand Government very cleverly took some damage control measures. First, despite not being a very vocal supporter of MGNREGA which was Sonia Gandhi's brain child it has increased the allocation for this scheme, thus acknowledging that very large number of migrant labour in urban areas had to go back to their villages after losing their jobs consequent to demonetization. This is an example of how they are trying to cope with rural distress and urban reverse migration. But then 100 days job under MGNREGA can't be termed as job. It is a temporary relief to those who want easy money sitting in their homes. Job seeking youth can't feel satisfied with 100 days job. This is here that Modi regime which came to power with big promises of creating employment has turned out to be a job taker from millions.

Second, tax cuts are extended to micro, small and medium enterprises, which have been badly hit by demonetisation. But we all know that tax cuts can be availed only if these units make profits. However the Economy Report suggests that small units are so badly hit by this demonetization that they are forced to pull down their shutters.

Our PM will do well to accept that his demonetization move, his personal fad to write his his name in the history, might have been the biggest news of the year 2016 but it has turned out to be the biggest blunder too. Government must come out with a white paper on the cost of demonetization.

Never lose your men

Vinod Prakash Gupta

PEOPLE we come across in life influence our personality one way or the other. During the course of our journey of life, these impressions contribute to a large extent in shaping our personality, behaviour, attitude and way of dealing with persons and situations.

I gathered one such critical influence from the late Darbari Lal, who died in harness in 1995 while functioning as the president of the DAV College Trust and Managing Committee. One rarely sees such a meticulous and mercurial rise as that of Darbari Lal who rose from being a personal assistant to the president of DAV organization. He was erudite, farsighted and practical, had astute management and outstanding man management skills and he was a man of extraordinary wisdom and competency. He was the man who relentlessly persuaded the DAV management to introduce the public school system in the DAV institutions. After considerable hitches and objections, he succeeded in getting the required approval. Establishing the Anglo-Vedic education in its true concept and real sense after the legendary Mahatma Hans Raj ji is attributed to Darbari Lal.

His man management was genuine, full of concern and in the overall interest of the organisation. He is regarded as the most charismatic personality of the organisation and was genuinely respected and loved by all. A small incident of long back ago bears testimony to this. There was one enthusiastic worker of Arya Samaj at Chamba who was also assisting in the school matters. His indulgence in administrative matters many a time caused irritation to the school Principal as he used to overstep his limits and authority in his sheer zeal to help. He often used his personal car for official work and spent small amounts from his own pocket.

He was not a man of great means. He requested the then regional director to compensate him a bit by paying Rs 1000 per month so that he might be able to help the Arya Samaj and DAV in a better way. The regional director though was not inclined to give him more than Rs 500 per month. But the person insisted that his case be put up to Darbari Lal who was due to visit Shimla soon. The Regional Director assured to place his case before Darbari Lal.

My wife, who was the Principal of DAV School, Shimla, and I (then serving in the IAS cadre and a member of the local managing committee) were present at the meeting where the case was put up. Darbari Lal knew about his work and dedication in the field of Arya Samaj and with a smile, he allowed him Rs 1,200 pm from the back date since he had started functioning as such.

He then turned to us and advised, "Never lose your men working for the organisation in every nook and corner of the country. They are the soul of DAV and Ary Samaj. Believe in their work, give them functional freedom, appreciate them and always keep them together and happy."

*****

दिन सिर्फ दौड़-भाग के लिए नहीं है!

लवी मिश्रा

शायद किसी बाइक के विज्ञापन पोस्टर पर लिखा था– 'Is every day a Race Day'- एक बाइक कंपनी के लिए भले ही ये पंक्तियां बाइक की खूबियों को दिखाने वाली हों, पर अगर आज की जिंदगी के संदर्भ में इस पर विचार किया जाये तो लगता है कि जैसे ये आज के इंसानी जीवन को विश्लेषित करना चाहती हों। हम हर पल रेस ही तो लगाते हैं, कभी अपनी इच्छाओं से, कभी अपनी महत्वाकांक्षाओं से तो कभी आस–पास के लोगों से। हर नया दिन हमारे मन में यही विचार लेकर आता है कि आज हम अपनी अमुक इच्छा पूरी करेंगे। पर जैसे ही हम अपनी एक इच्छा पूरी करते हैं कि दूसरी इच्छा उत्पन्न होकर हमें अपने पीछे भगाने लगती है। और हम इस रेस में इस प्रकार शामिल हो जाते हैं कि रास्ते में आने वाले खूबसूरत नजारों की ओर नजर तक नहीं उठा पाते।

ऐसी ही एक कहानी सुनाना चाहती हूँ। एक लड़का था, वह बहुत अमीर व्यक्ति बनना चाहता था। उसने पहले छोटा व्यवसाय शुरू किया, उसकी मेहनत और लग्न से उसका व्यवसाय बहुत तेजी से बढ़ने लगा। उसकी शादी हुई, बच्चे हुए लेकिन उसका पूरा ध्यान अपने व्यवसाय पर ही रहता। वह न तो कभी अपनी पत्नी और न ही बच्चों को समय देता। बच्चों की देख रेख का पूरी जिम्मेवारी पत्नी को ही निभानी पड़ती । अगर कभी उसकी पत्नि इस बारे में शिकायत करती तो उसका जवाब होता कि परिवार की सबसे बड़ी जिम्मेदारी उसके सदस्यों की जरूरतें पूरी करना है और वे केवल पैसे से ही पूरी होती हैं। वह कहता, 'मैं जितना ज्यादा पैसा कमाऊंगा उतना ही अच्छे से परिवार का ध्यान रख पाऊँगा।'

उसकी पत्नी बहुत अकेली महसूस करती, बच्चे भी धीरे–धीरे बड़े हो गए थे और अपनी दुनिया में रमने लगे थे। चूँकि बच्चों को पिता से कभी भावनात्मक लगाव नहीं मिला था इसलिये वो अपनी मां तक सीमित थे। पत्नी को अचानक कैंसर हो गया, उसने बहुत पैसा खर्च किया इलाज में, पर कभी भी पत्नी के पास बैठ उसे दिलासा नहीं दिया, क्योंकि ऐसा करना वह जरूरी नहीं समझता था। तभी उसकी पत्नी चल बसी, अब वह भी बूढ़ा हो रहा था और पत्नी के जाने के बाद था भी एक दम अकेला। शारीरिक और मानसिक शक्ति के क्षीण होने के साथ ही वह बिस्तर से लग गया। उसका व्यवसाय उसके बेटों ने संभाल लिया था। बीमारी और अकेलेपन में उसे भावनात्मक संबल की जरूरत महसूस होने लगी थी। एक दिन उसने अपने बेटों से कहा कि कभी–कभी दो पल मेरे पास बैठ जाया करो, तो उन्होंने जो जवाब दिया, पापा आप ने ही तो सीखाया है ——, 'आपको जिन्दा रहने के लिए क्या चाहिए? अच्छा खाना और अच्छी दवाइयाँ, हमें नहीं लगता कि इसमें कोई कमी है। अगर किसी भी प्रकार से धन की कमी हैं तो बतायें हम और दे देंगे। ' यह सुनकर उसे पता चला कि उसने अपनी जिंदगी के कितने अनमोल पलों को अपनी महत्वाकांक्षा के बोझ तले कुचल दिया।

इसलिए एक बाइक या कार के लिए हर दिन रेस डे हो सकता है, पर हम इंसानों के लिए नहीं। यह खूबसूरत दुनिया हम अपनी सुन्दर इंसानी आँखों से शायद एक बार ही देख पाते हैं! इसे समझ लिया तो जीने का ढंग स्वयं आ जायेगा।

*****

Why did Mountbatten fix August 15 as Independence Day?

Rajindar Sachar

In an article in The Tribune recently, Natwar Singh had suggested that Mahatma Gandhi approved of the Partition plan. This is factually incorrect. Socialist leader Ram Manohar Lohia's book Guilty Men of India's Partition gives a factual position. Lohia was present in the final CWC meeting in which the Partition plan was accepted.

SOME people have attributed the Congress acceptance of Partition of India in 1947 to "the persuasive voice of Gandhiji which made the working committee accept the Partition and which but for Gandhiji's intervention, the working committee might not have approved". This is grossly unfair and presents a wrong picture of the final efforts by made by Gandhiji to prevent Partition up to the final stages.

It is now well-known that when Jinnah was insistent, Gandhiji made a last desperate attempt by asking JawaharlalNehru and Sardar Patel to step aside and let Jinnah be the first Prime Minister of undivided India. He should form his ministry the way he liked, including the choice to have only Muslims league Ministers in the Central Cabinet, with the assurance that the Congress will not object. One cannot say what Jinnah's reactions would have been. But considering that Jinnah is on record on insisting that his house in Mumbai / Delhi be not declared evacuee property because he wished to have good Indo-Pak relations and would like to spend one month every year in India, it would have been worthwhile trying.

This could not be concretised because both Nehru and Patel were forthright in rejecting this proposal. So for many of us who were adults then this reference to Gandhiji's acceptance of Partition is painful and does not represent the factual position. A reference to socialist leader Dr Ram Manohar Lohia's, book Guilty Men of India's Partition, gives the correct factual position. Lohia was present in that final Congress Working Committee meeting. Lohia, who along with Jaiprakash Narain attended that meeting, has written: "I should like especially to bring out two points that Gandhiji made at this meeting. He turned to Mr Nehru and Sardar Patel in mild complaint that they had not informed him of the scheme of Partition, before committing themselves to it. Before Gandhiji could make out his point fully, Nehru intervened with some passion to say that he had kept him fully informed. On Mahatma Gandhi's repeating that he did not know of the scheme of Partition, Nehru slightly altered his earlier observation. He said that Noakhali was so far away and that, while he may not have described the details of the scheme he had broadly written of the Partition to Gandhiji.....I will accept Mahatma Gandhi's version of the case, and not Nehru's and who will not? One does not have to dismiss Nehru as a liar. All that is at issue here is whether Mahatma Gandhi knew of the scheme of Partition before Nehru and Patel had committed themselves to it. It would not do for Nehru to publish vague letters which he might have written to Mahatma Gandhi, doling out hypothetical and insubstantial

information. There was definitely a hole-in-the-corner aspect of this business. Nehru and Patel had obviously between themselves decided that it would be best not to scare Gandhiji away before the deed was definitely resolved upon. Keeping turned towards Messrs Nehru and Patel, Gandhiji made his second point. He wanted the Congress party to honour the commitments made by its leaders. He would, therefore, ask the Congress to accept the principle of Partition. After accepting the principle, the Congress should make a declaration concerning its execution. It should ask the British government and the Viceroy to step aside, once the Congress and the Muslim League had signified their acceptance of Partition. The partitioning of the country should be carried out jointly by the Congress party and the Muslim League, without the intervention of a third party. This was, I thought so at that time and still do, a grand tactical stroke. Much has been said about the saint having simultaneously been a tactician, but this fine and cunning proposal has, to my knowledge, not so far been put on record.....there was no need for anyone else to oppose the proposal. It was not considered. I am writing this to put the record straight".

Gandhiji's anguish at the Partition of the country was so unbearable that he refused to be in Delhi on August 15. What nobility that the greatest fighter for India's freedom refused to share this glory and left Delhi to fight against the communal carnage taking place at Calcutta and to give the assurance of safety to the minorities.

I accept the fact that the conditions in the country had deteriorated to such a level that it was not possible to prevent the Partition. Yet, we have not given sufficient thought to the fact that millions of deaths, most immeasurable destruction in the process of Partition could have been averted if the leaders of the parties had shown statesmanship in carrying out the process of partitioning the country. It is well-known that Prime Minister Clement Attlee had given June, 1948 as the date by which the British government would leave India, when Lord Mountbatten was sent to India in March, 1947.

Had this schedule been observed, requisite and detailed arrangements for the safety of millions of people, on both sides, could have been made. Undoubtedly, slaughter and mutual hatred would have been there but both the governments could have made safe arrangements for exchange of populations. The government machinery could have been mobilised. But this did not happen. The reason was the unilateral announcement by Lord Mountbatten on June 1947, that India's Independence Day would be on August 15, 1947. This left no time to make arrangements for an unprecedented, massive exodus.

One knows now why this sudden announcement was made at a press conference, fixing August 15, 1947 as Independence. The reason was the vanity and self-glorification of Mountbatten. He had accepted the surrender of the Japanese navy on August 1945, as the Supreme Allied Commander, South-East Asia Command (SEAC), of Allied powers.

Our politicians were, unfortunately, too self-obsessed with ignorance and vanity. As a consequence, they maintained an ominous silence, resulting in the death of millions and the destruction of massive property. Can history forgive them? I doubt very much.

The writer is a retired Chief Justice of the Delhi High Court

*****

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म्।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

चंडीगढ़ की विभिन्न आर्य समाजों से जुड़े श्रधालु P.G.I में दिये गये लंगर में सेवा के लिये आये थे।

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

मधुकर कौड़ा **लेखराम (+91 7589219746)**

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

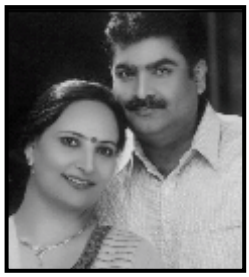

Mr Sanjay Bhatia & Mrs Luxmi Bhatia

Mr Anil Soni

Mr Arvind Garg

Mrs Chitkara

Mr Naresh Nijhawan

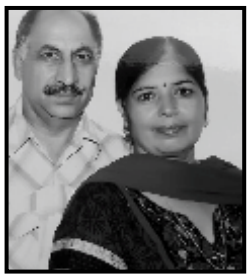

Mrs & Mr Dharampal

Mr & Mrs Poonam Verma

Mr Rajinder Gabha

Mr O.P. Setia & Mrs Santosh Setia

Mr & Mrs Saroj Miglani

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in